कलीसिया परिशिष्ट 1

[मसीह]

पुराने नियम में मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी (यशायाह 52:13-53:12)

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह भविष्यद्वाणी 700 वर्ष ई.पू. से भी अधिक समय पहले की थी। ऐसी भविष्यद्वाणी किसी अन्य धर्म या मानव इतिहास में नहीं मिलती है! भविष्यद्वाणी प्रत्येक 3 आयतों के 5 गद्यांशों में विभाजित है। इस भविष्यद्वाणी में उसके *महिमान्वित* पद से *पीड़ी सहने* की गहराई तक उतरने और फिर *ऊँचे पर उठाये जाने* के विषय में बताया जा रहा है। सभी आयतों का इब्रानी भाषा से अनुवाद किया गया है।

महत्वपूर्ण बात।

यीशु को हमारे पापों के दण्ड के रूप में क्रूस पर चढ़ाया गया (यशायाह 52:13-53:12)।

नये नियम का दर्शन स्पष्टरूप से सिखाता है कि यहोवा के दास के बारे में यह भविष्यद्वाणी प्रभु यीशु मसीह में पूरी हुई है। मसीह ने "पाप नहीं किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली" (यशायाह 53:5 की तुलना 1 पतरस 2:22 से करें)। मसीह को भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया (यशायाह 53:7-8 की तुलना प्रेरितों के काम 8:32-33 से करें)। मसीह ने बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे दिए (यशायाह 53:10 की तुलना मरकुस 10:45 से करें)। मसीह को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ (यशायाह 53:10-11 की तुलना 2 कुरिन्थियों 5:21 से करें)। मसीह को हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया (यशायाह 53:11-12 की तुलना रोमियों 4:25 से करें)। मसीह को सताया गया, घात किया गया और वह फिर मृतकों में से जी उठा (यशायाह 53:5 की तुलना मरकुस 10:32-34 से करें)। मसीह को दु:ख उठाना अवश्य था ताकि वह अपनी महिमा में प्रवेश करे (लूका 24:26)।

क. गद्यांश 1 - यशायाह 52:13-15
यीशु मसीह को सताने के द्वारा ऊँचे (चढ़ाया) पर उठाया जायेगा।

भविष्यद्वाणी। [1]

पहला गद्यांश भविष्यद्वाणी के विषय को दर्शाता है। "आने वाले मसीहा को सताने के द्वारा ऊँचे पर उठाया जायेगा।" इस गद्यांश में यहोवा स्वयं बात कर रहा है।

1. 13वीं आयत में यीशु मसीह के ऊँचे पर उठाये जाने की व्याख्या की गई है।

52:13 - अनुवाद : "देखों मेरा दास वृद्धि से काम करेगा (Hebrew: shkl, Q), वह ऊँचा (Hebrew; rum, Q), महान (Hebrew: ns', Pi), और अति (Hebrew: gbh, Q) महान हो जाएगा (Hebrews: me'od)।"

13वी आयत में यीशु मसीह के ऊँचे पर उठाये जाने का वर्णन किया गया है, जो कि उसके जी उठने, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजने को दर्शाता है (प्रेरितों के काम 3:13; फिलिप्पियों 2:9-11)। उसके सताये जाने पर विजय का मुकुट पहनाया जायेगा, उसके श्रम का निश्चय ही परिणाम निकलेगा।

2. 14वीं आयत में उसके अपमानित होने का वर्णन किया गया है।

52:14 - अनुवाद : "जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (Hebrew: shmm, Q), क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था (Hebrew: mishchat)) कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था (Hebrew: mare'hu), और उसकी

सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी (Hebrew: to'ar)।"

14वीं आयत में उसके अपमानित होने का वर्णन किया गया है, जिसमें लोगों ने उसके साथ इतना दुर्व्यवहार किया, जिसके कारण उसे पहिचानना लगभग न के बराबर हो गया था (मरकुस 14:65; मरकुस 15:15,17,19; यूहन्ना 19:1-5)।

3. 15वीं आयत में उसकी महिमा का वर्णन किया गया है।

52:15 - अनुवाद : "वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा (खड़ा करेगा) (Hebrew: nzh, Hi), क्योंकि उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे (Hebrew: qpts, Q), क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया (Hebrew: spr, Pu), और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी (Hebrew: bin, Hitpol)।"

[1] "प्रकाशितवाक्य 19:10 यीशु मसीह की गवाही (यीशु मसीह द्वारा दी गई गवाही) (1 पतरस 1:9-12) (यीशु मसीह के विषय में दी गई गवाही) (प्रकाशितवाक्य 12:17)। भविष्यद्वाणी की आत्मा (सार) है।" भविष्यद्वाणी व्यर्थ के अअनुमान नहीं लगा रही है (यिर्मयाह 23:16-40)।

15वीं आयत में उसकी महिमा का वर्णन किया गया है। और 14वीं आयत में उसके अपमान की तुलना का वर्णन भविष्य में होने वाली उसकी महिमा से करता है। "पवित्र" करने का अनुवाद ऊपर "खड़े होने" से किया जा सकता है। राष्ट्र और राजा घबराहट से खड़े हो जाएँगे और शान्त रहकर उसके प्रभावशाली रूप को देखेंगे (तुलना करें : यशायाह 49:7; तुलना करें : अय्यूब 29:9-10; भजन 22:29)। वह ऐसी बातों को देखेंगे जिसका वर्णन न कभी उनके सुनने में आया और न ही उन्होनें ऐसी बातों को समझा - अर्थात् सुसमाचार और नये नियम की शिक्षाएँ। बहुत से लोगों को परमेश्वर के दर्शन की बातों पर आश्चर्य होगा, जब वे यीशु मसीह को देखेंगे तो वे उसे उसके पहले आगमन से भिन्न पाकर आश्चर्यचकित हो जाएँगे।

परिपूर्णता।

नये नियम का दर्शन यीशु के साथ हुए दुर्व्यवहार के विषय में बताता है (यूहन्ना 19:1-3), परन्तु यह नहीं बताता कि दुर्व्यवहार के बाद यीशु का रूप कैसा हो गया था।

नये नियम का दर्शन स्पष्टरूप से यह सिखाता है कि उसे मृतकों में से जिलाया गया, वह स्वर्ग पर चढ़ा और परमेश्वर के दाहिने ओर सम्पूर्ण जगत के राजा के रूप में जा बैठा। "बहुत से" लोग जो उसकी पीड़ा से व्याकुल हो गए थे, "बहुत से" उन लोगों से आगे निकल जाते हैं जो उसके महिमान्वित होने के बाद उसे जानते थे - वे अपने उच्च स्तर के राजाओं सहित प्रत्येक राष्ट्र के लोगों की संख्या की बराबरी कर रहे हैं।

ख. गद्यांश 2 - यशायाह 53:1-3
यीशु मसीह को मनुष्यों द्वारा तुच्छ और त्यागा हुआ जाना जाएगा।

भविष्यद्वाणी।

दूसरे गद्यांश में यीशु मसीह के अपमान का वर्णन किया गया है। उसके साथ अविश्वास, निन्दा और ठट्ठे (अपशब्द) का दुर्व्यवहार किया जाएगा। यहाँ यशायाह भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के सच्चे लोगों के प्रतिनिधि के रूप में बोल रहा है।

1. आयत 1 बताती है कि धार्मिक क्षेत्र में उसके साथ अविश्वास का दुर्व्यवहार किया जाएगा।

53:1 - अनुवाद : "जो समाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया? यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ (Hebrew: glh, Hitp)?"

आयत 1 बताती है कि धार्मिक क्षेत्र में उसे अविश्वास के साथ तुच्छ जाना जाएगा। यशायाह 52:13 और 53:12 यहोवा की ओर से दिया गया एक सीधा दर्शन है। कोई भी मनुष्य उद्धार की ऐसी योजना को तैयार नहीं कर सकता। यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि इस दर्शन को विश्वास के साथ ग्रहण किया जाये, परन्तु यशायाह भविष्यद्वक्ता और मसीहा दोनों को अविश्वास का सामना करना पड़ा - जिसकी पुष्टि नये नियम में की जा चुकी है (यूहन्ना 12:37-38; रोमियों 10:16)।

2. आयत 2 बताती है कि सांसारिक क्षेत्र में उसे तुच्छ जाना जाएगा।

53:2 - अनुवाद : "क्योंकि वह उसके सामने (परमेश्वर के) अंकुर के समान (Hebrew: joneq), और ऐसी जड़ के समान (Hebrew: shoresh) उगा जो निर्जल (Hebrew: tsijah) भूमि (Hebrew: >erets) में फूट निकले (Hebrew: >lh); उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी (Hebrew: hadar) कि हम उसको देखते (Hebrew: r<h, Ni), और न उसका रूप (Hebrew: mar<eh) ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते (Hebrew: chmd, Ni)।"

आयत 2 बताती है कि सांसारिक क्षेत्र में उसे तुच्छ जाना जाएगा। यह मसीहा के निम्न वंश का वर्णन करता है। वह एक ऐसी पीढ़ी से उत्पन्न होगा जो कि पहले एक पेड़ था (दाऊद का राज घराना), लेकिन बाद में यह केवल एक मिट्टी से ढका हुआ ठूँठ होगा (यूसुफ और मरियम का निर्धन घर) (यशायाह 11:1)। उसके परिवार और राष्ट्र ने उसे कोई अधिकार या महत्व नहीं दिया था। उसके पास कोई विशेष शारीरिक सुन्दरता नहीं थी और उसका बाहरी स्वरूप लोगों को स्वभाविक रूप से उसकी ओर आकर्षित होने का कोई कारण प्रदान नहीं करता। फिर भी अपने विचारों से (यशायाह 49:1) वह यहोवा की आँखों के सामने बढ़ता गया। यहोवा ने उस पर अपनी दृष्टि बनाये रखी और यह देखता रहा कि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करे (तुलना करें : लूका 2:52)!

शारीरिक रूप से उसमें कोई भी बाहरी सुन्दरता या आकर्षण नहीं था (1 शमूएल 16:18 में दाऊद देखें)।

3. आयत 3 यह बताती है कि शारीरिक क्षेत्र में उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया।

53:3 - अनुवाद : "वह तुच्छ जाना जाता (Hebrew: bzh, Ni) और मनुष्यों का त्यागा हुआ था (Hebrew: chdl, K); वह दु:खी पुरूष था (Hebrew: mak<ob), रोग से (Hebrew: choli) उसकी जान पहिचान थी (Hebrew: jd>, Pu); और लोग उस से मुख फेर (Hebrew: str, Ni) लेते थे। वह तुच्छ जाना गया (Hebrew: bzh, Ni), और, हम ने उसका मूल्य (Hebrew: chshb, Ni) न जाना।"

आयत 3 यह बताती है कि शारीरिक क्षेत्र में उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया। यद्यपि वह स्वयं को देश में रहने वाले पीड़ित और बीमार लोगों के बीच पहिचान पाया, उसके साथ लोगों द्वारा यहाँ तक दुर्व्यवहार किया जाएगा कि शायद ही कोई उसे पहिचान पाए (यशायाह 52:14)। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने अपने लोगों के प्रतिनिधि के रूप में यह भविष्यद्वाणी की कि इस्राएल उसे स्वीकार नहीं करेगा।

परिपूर्णता।

मानवीय तौर पर देखा जाए तो यीशु मसीह के पूर्वजों में कोई भी सिद्ध या पवित्र नहीं था : यहूदा ने तामार से व्यभिचार किया, सलमोन ने राहाब वैश्या से विवाह किया, बोअज़ ने मोआबी रूत से विवाह किया और दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया (मत्ती 1:3,5,6)।

यीशु नासरत में गलील के तुच्छ समझे जाने वाले नगर में पला-बढ़ा था (जहाँ पर अन्यजाति के लोग रहते थे) (मरकुस 1:9; तुलना करें : यूहन्ना 1:46)। परमेश्वर ने स्वयं को यीशु मसीह के द्वारा प्रगट किया और फिर भी उसके साथ गलील (लूका 4:29), गिरासेनियों (लूका 8:37अ) और यहूदिया (यूहन्ना 2:18; 5:16; 6:66; 7:12,20 आदि) में लोगों के अविश्वास के कारण दुर्व्यवहार किया गया। उसके स्वयं के नगर ने उसका विरोध किया (मरकुस 6:3)। उसके अपने भाइयों ने उस पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 7:5)। वह एक ऐसे समय में रह रहा था जिसमें इस्राएल परमेश्वर की प्रजा होते हुए भी सूखी और मरी हुई थी (मत्ती 21:43) और दाऊद के घराने ने बहुत लम्बे समय से राज्य नहीं किया था।

कोई स्वभाविक रूप से उसकी ओर आकर्षित नहीं हुआ (यशायाह 53:1-3)। महासभा के यहूदी अगुवों ने उसके चेहरे पर थूका और उसे घूँसे मारे (मत्ती 26:67)। रोम के सैनिकों ने उसके कपड़े उतार दिये, उस पर थूका, उसके सिर पर काँटों का ताज पहिनाया और एक सैनिक ने उसके सिर पर बार-बार मारा (मत्ती 27:27-30)। उसे इतनी बुरी तरह मारा गया था कि कोई उसके बिगड़े हुए चेहरे की ओर नहीं देख पाया।

ग. गद्यांश 3 - यशायाह 53:4-6
यीशु मसीह को हमारे पापों के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया।

भविष्यद्वाणी।

गद्यांश 3 उद्धार के सुसमाचार का वर्णन करता है। मसीहा को सताया जाएगा और उसे अपने लोगों के बदले मारा जाएगा, अर्थात् वह प्रायश्चित का बलिदान बन जाएगा। यह "हमारे पापों" की तुलना "उसकी पीड़ा" और "उसकी पीड़ा" की

तुलना "हमारी चंगाई" से करता है। "हम" केवल परमेश्वर के सच्चे लोगों को ही दर्शाता है। ये वे लोग हैं जो विश्वास करते हैं और यहोवा का भुजबल उन पर प्रगट हुआ है (आयत 1)।

1. आयत 4 बताती है कि वह हमारे रोगों और दु:खों को उठा ले जाएगा।

53:4 - अनुवाद : "निश्चय (Hebrew: <aken) उस ने हमारे रोगों को सह लिया (Hebrew: ns<a) और हमारे ही दु:खों (Hebrew: mak<ob) को उठा लिया (Hebrew: sbal); तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा (Hebrew: nagu>a) - कूटा (Hebrew: mkh, Pu) और दुर्दशा (Hebrew: m>n) में पड़ा हुआ समझा (Hebrew: chshb)।"

आयत 4 बताती है कि मसीहा हमारे रोगों और दु:खों को उठा ले जाएगा। "रोग" और "दु:ख" शब्द संक्षेप में मनुष्य की पीड़ा को दर्शाते हैं जो कि पाप में गिर जाने का परिणाम है। यह सभी प्रकार की शारीरिक और मानसिक रोगों और कमियों को दर्शाता है। वह इसके बदले, स्वयं अपनी इच्छा से इन्हें सहेगा और इसका बोझ अपने ऊपर उठा लेगा। वह अपने दूसरे आगमन से पहले इन बीमारियों और दु:खों को अपने ऊपर ले लेगा, लेकिन अपने दूसरे आगमन पर जब वह मरे हुओं को जीवित और सब कुछ नया करेगा तब निश्चित ही सभी बीमारियों और दु:खों को भी दूर करेगा।

लेकिन इस्राएल का रुख इसके प्रति काफी निन्दनीय और विरोध से भरा है। लोगों को ऐसा लगेगा कि वह परमेश्वर द्वारा दिये गए अपने पापों के बदले पीड़ा का फल भोग रहा है। परमेश्वर ने उस पर पीड़ा और विपत्ति में डालने के लिए अपने हाथों को उठाया है (1 शमूएल 6:9; अय्यूब 1:11;19:21)।

2. आयत 6 बताती है कि उसे हमारे पापों के कारण क्रूस पर चढ़ाया जाएगा।

53:5 - अनुवाद : "परन्तु वह (emphasized against "we") हमारे ही अपराधों (Hebrew: pesha) के कारण घायल (Hebrew: chll) किया गया, वह हमारे अधर्म (Hebrew: >on) के कामों के हेतु कुचला (Hebrew: dk<a, Pu) गया; हमारी ही शान्ति (that is, that brought us peace) (Hebrew: shlm) के लिये उस पर ताड़ना (Hebrew: musar) पड़ी कि उसके कोड़े (Hebrew: cheburah) खाने से हम चंगे (Hebrew: rp<a, Ni) हो जाएँ।"

आयत 5 बताती है कि मसीह को हमारे पापों की ख़ातिर क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। उसे घायल करके और पीड़ा के साथ कुचल दिया जाएगा और अन्त में कीलें ठोकी जाएँगी (मारा जायेगा)। यह भविष्यवाणी उल्लेखनीय है, क्योंकि रोमियों द्वारा अपराधियों की सजा के लिए क्रूस पर चढ़ाया जाना, यशायाह के समय के 600 साल बाद शुरू हुआ था।

भविष्यद्वाणी इसलिए भी उल्लेखनीय है, क्योंकि यह बहुत लम्बे समय पहले की गई थी कि मसीहा को क्यों अपना प्राण देना पड़ेगा। मुख्य बात यह है कि हमारे "अपराध" और "अधर्म" के कारण यह पीड़ा बहुत अधिक हो गई है। यह मसीहा की मृत्यु का कारण और परिणाम की स्पष्ट भविष्यद्वाणी है। उसे यशायाह और पुराने नियम के विश्वासियों और अपने लोगों के अधर्म और पाप के लिए क्रूस पर चढ़ाया जाएगा! उसे उनकी जगह दण्डित किया जाएगा (तुलना करें : रोमियो 3:25)। दण्ड एक प्रतिशोध है (यिर्मयाह 2:19)। दण्ड जिसके द्वारा शान्ति (परिपूर्णता) और उसके कोढ़े खाने से जो चंगाई मिलती है वह बदले के रूप में पीड़ा का रहस्य है! जिसकी कल्पना किसी मनुष्य ने नहीं की थी, वही परमेश्वर का सुखद आनन्द बन गया!

3. आयत 6 बताती है कि वह हमारे बदले दण्डित किया जाएगा।

53:6 - अनुवाद : "हम तो सब के सब भेड़ों के समान (Hebrew: ts<on) भटक गए थे (Hebrew: t>ah), हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया (Hebrew: pnh), और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया (Hebrew: pg>a)।"

आयत 6 बताती है कि मसीहा को हमारे बदले इसलिए दण्डित किया जाएगा क्योंकि हम उससे दूर हो गए। मनुष्य का पाप परमेश्वर से जानबूझकर की गई, जिद्दी और हठीली स्वतंत्रता है। यही कारण है कि मनुष्य का पाप दोषपूर्ण और दडण्नीय है। सभी लोगों ने परमेश्वर से अलग होकर अपने जीवन का मार्ग ले लिया और परमेश्वर के मार्ग पर चरवाहे के पीछे चलने से मना कर दिया। "लेकिन अब यह ज़रूरी हो चुका है कि, वे अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास वापस फिर आ जाएँ" (1 पतरस 2:25)!

परिपूर्णता।

यीशु मसीह ने बहुत से लोगों को दुष्टात्माओं से छुटकारा दिया और बहुत से बीमार लोगों को इस भविष्यवाणी की पूर्ति

के रूप में चंगा किया (मत्ती 8:16-17)। यद्यपि यीशु मसीह ने लोगों की पीड़ा स्वयं उठा ली परन्तु लोगों ने सोचा कि वह परमेश्वर द्वारा दिये गए अपने ही पापों का दण्ड पा रहा है! उन्होंने सोचा कि वह परमेश्वर द्वारा दिए गए इस दण्ड के योग्य है (मत्ती 26:65-66)। इस्राएलियों ने "पीड़ा" को पाप की सजा के रूप में माना, और फरीसियों ने यह सोचा कि यह पीड़ा उनके पापों के कारण नहीं बल्कि उसके स्वयं के पापों के कारण उस पर आ पड़ी है! ऐसी सोच परमेश्वर के प्रति एक निन्दनीय बात है!

उसकी क्रूस की मृत्यु के दौरान, सैनिकों ने उसके हाथों और पैरों में कीलों से ऐसा छेद दिया कि वो क्रूस के आर-पार हो गई, फिर उसे क्रूस पर सीधा लटका दिया और ज़ोर लगाकर उस क्रूस को एक गड्ढे में डाल दिया गया। और उसे शापित मनुष्य के रूप में धूप में लटका दिया (तुलना करें गलातियों 3:13)। यह अपराधियों को पीड़ा से सताने का एक भयावह तरीका था। अन्त में पीड़ा के इस हिंसक तरीके ने उसके मनुष्यरूपी जीवन को कुचल दिया और उसकी मृत्यु हो गयी।

पुराने नियम में यह भविष्यद्वाणी की गयी थी कि यीशु मसीह को अपने लोगों के अपराधों और अधर्मों के कारण सताया जायेगा। "अपराध" हृदय में पाया जाने वाला एक विद्रोह है जिसे परमेश्वर की शिक्षा और आज्ञाओं के लिए अनजान अवज्ञा में व्यक्त किया गया है। "अधर्म" का अर्थ परमेश्वर की सत्य की बातों को आधे सत्य या झूठी बातों में तोड़ना और मरोड़ना है। यीशु मसीह ने अपने प्राण को लोगों को सुधारने के लिए नहीं बल्कि हमारे पापों का मूल्य चुकाने के लिए दिया। वह न केवल हमारे पापों के कारण मरा बल्कि हमारे बदले मरा! "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया" (1 पतरस 2:24)। उसी को उसने हमारे लिये "पाप ठहराया", ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह "परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ" (2 कुरिन्थियों 5:21)। उसने हमारी जगह ले ली! जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती (यूहन्ना 5:24), परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 3:24,28), जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह उसके बदले क्रूस पर मारा गया, उसका परमेश्वर से मेल-मिलाप हो जाता है (1 पतरस 3:18)। परमेश्वर विश्वासियों को शान्ति देता है (रोमियों 5:9-10) और इस प्रकार वे प्रभु में शान्ति पाते हैं (रोमियों 5:1) और अन्य लोगों के साथ शान्ति बनाये रख सकते हैं (इफिसियों 2:14-15)। परमश्वेर की शान्ति "परमेश्वर के उद्धार के पूर्ण कार्य, आशीष और आनन्द को लाती है।" "परमेश्वर की चंगाई" सभी प्रकार के संकट, दु:ख, परेशानी और पीड़ा से छुटकारा दिलाती है।

पाप का आधार और निष्कर्ष "परमेश्वर से अलग होना" और "आत्म-निर्भरता" है, जिसमें एक व्यक्ति ने विद्रोह और अपराध के द्वारा जानबूझकर अपने जीवन को चरवाहे से और परमेश्वर की योजना के अलग कर लिया है और स्वयं को सही साबित करने के लिए परमेश्वर के वचन को अपने अनुसार मोड़ लिया है।

"परमेश्वर ने जिस कार्य को करने से मना किया है वही करना" या "उसकी आज्ञा का पालन न करना" पाप का फल है। यहोवा ने यीशु मसीह पर "हमारे" पापों का बोझ डाल दिया! उसने हमारे अपराध, दण्ड और दु:ख को स्वयं पर ले लिया ताकि हम अनुग्रह से उसकी परिपूर्ण धार्मिकता और पवित्रता प्राप्त कर सकें!

घ. गद्यांश 4 - यशायाह 53:7-9
यीशु मसीह पीड़ा सहने के लिये स्वयं को शून्य कर देगा।

भविष्यद्वाणी।

गद्यांश 4 यह बताता है कि किस प्रकार पूर्ण रीति से मसीहा (यीशु मसीह) ने परमेश्वर की योजना के सामने स्वयं को शून्य कर दिया : "पीड़ा सहने के द्वारा उद्धार।" 7 से 10 पदों में, भविष्यद्वक्ता अब देश में विश्वासियों के प्रतिनिधि (जो कि एक याजक के रूप में) के रूप में नहीं बोलता है, बल्कि वह परमेश्वर के उद्धार की योजना का प्रचार करता है (जो कि एक भविष्यद्वक्ता के रूप में है)!

1. आयत 7 एक भेड़ के बच्चे के रूप में उसकी पीड़ा का वर्णन करती है।

53:7 - अनुवाद : "वह सताया गया (oppressed, tyrannised) (Hebrew; ngs), तौभी वह सहता रहा (Hebrew: >anah Pu) और अपना मुँह (Hebrew: peh) न खोला (Hebrew: ptch, Pi); जिस प्रकार भेड़ (Hebrew: seh) वध (Hebrew: tebach) होने (Hebrew: jbl, Hi), के समय या भेड़ी (Hebrew: rahel) ऊन कतरने के समय (Hebrew: gazaz) चुपचाप शान्त (Hebrew: <alam, Ni), रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुँह न खोला (Hebrew: ptch)।"

आयत 7 बताती है कि किस प्रकार मसीहा (यीशु मसीह) को सताया जायेगा। उसको मिस्र के दासों के समान सताया

जायेगा (निर्गमन 3: 7; यशायाह 9: 3)। अन्याय के विरुद्ध विद्रोह किये बिना उसने स्वयं को अपमानित होने दिया (1 पतरस 2:23)। अपने मुँह को खोले बिना उसका भेड़ के समान वध कर दिया जाएगा। उसे स्वयं के बचाव के बिना झूठे आरोपों में, सार्वजनिक ठट्ठे के द्वारा और नग्न अवस्था में क्रूस पर चढ़ाया जायेगा। इसी प्रकार अपने सताए जाने के द्वारा वह परमेश्वर की योजना को पूरा करेगा।

2. आयत 8 एक अपराधी के रूप में उसकी मृत्यु का वर्णन करती है।

53:8 - अनुवाद : "अत्याचार (Hebrew: >otser) करके और दोष (Hebrew: mishpat) लगाकर वे उसे ले गए (Hebrew: lqch) उस समय के लोगों में से (Hebrew: dor) किस ने इस पर ध्यान दिया (खोज)[2] कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया (Hebrew: gzz, Ni)? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार (Hebrew: neg>a) पड़ी।"

आयत 8 बताती है कि किस प्रकार मसीहा की मृत्यु होगी। उसकी मृत्यु शान्तिपूर्ण तरीके से (बुढ़ापे में) नहीं होगी, लेकिन एक अपराधी के रूप में होगी, जिसका दण्ड एक अधर्मी जाति और एक सांसारिक महासभा (हन्नाह और कैफा और यहूदी रोमी अधिपत्र, पिलातुस के साथ यहूदी महासभा) ने सुनाया। लोगों द्वारा दुर्व्यवहार किये जाने के बाद उसे गतसमनी से, व्याकुलता के साथ क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले जाया जायेगा। महत्वपूर्ण बात परमेश्वर की परीक्षा है जिसमें यीशु मसीह पापियों के लिए आश्वासन के रूप में प्रगट होता है। इस्राएल ने उसे अस्वीकार कर दिया और अब उसे उनसे अलग कर दिया जायेगा। बचाव की उपस्थिति से इस्राएल अब वंचित हो चुका था।

उसकी मृत्यु और गाढ़े जाने के बाद का उसका "निवास स्थान" या जगह अभी तक अज्ञात है (यशायाह 38:12) (9 आयत)। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह शिकायत की कि इस्राएल के लोगों ने अपने मसीहा को अस्वीकार कर दिया, उसकी निन्दा की और उसे मार डाला और मसीह उस जगह गया जिसे कोई नहीं जानता था (लूका 23:43,46)। पुराने नियम के समय में जब तक यीशु के चेले यीशु की मृत्यु का शोक नहीं मनाते, तब तक मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में थोड़ा ही ज्ञान था। पुराने नियम के समय में लोगों को मृतकों में से जिलाया तो गया था (बाद में फिर से मरने के लिए), लेकिन किसी का भी पुनरुत्थान नहीं हुआ था (फिर से न मरने के लिए)! ज़ोर इस तथ्य पर है कि उसकी मृत्यु के बाद उसे इस्राएल की दृष्टि से दूर कर दिया गया था। उसे पृथ्वी के जीवित प्राणियों के बीच में से ऐसे अलग किया गया जैसे कि कोई गिरा हुआ पेड़ (2 राजाओं 6:4)।

3. आयत 9 में उसके गाढ़े जाने का वर्णन एक धनवान के रूप किया गया है।

53:9 - अनुवाद : "और उसकी कब्र (Hebrew: qeber) भी दुष्टों (Hebrew: rasa) के संग ठहराई गई (Hebrew: ntn, Ni), *[यह भविष्यद्वाणी वह मोड़ है : जहाँ उसके न्याय और महिमान्वित होने का विवरण पूरी तरह से बदल जाता है]* और मृत्यु (Hebrew: maut) के समय वह धनवान (Hebrew: >asir) का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रकार का अपद्रव (Hebrew: chamas) न किया था और उसके मुँह से कभी छल (Hebrew: mirmah) की बात नहीं निकली थी" (तुलना करें : 1 पतरस 2:22-23)।

आयत 9 बताती है कि किस प्रकार मसीह को गाढ़ा जायेगा। अन्यायपूर्ण याजकों ने मसीह को एक अपमानजनक स्थान में गाढ़ने की योजना बनाई थी, जैसा कि एक अपराधी के साथ किया जाता था। इस्राएल में एक अपमानजनक स्थान में गाढ़ा जाना एक बहुत ही भयानक बात थी (यशायाह 14:18-20; यिर्मयाह 8:1-2; यिर्मयाह 36:30)। परन्तु परमेश्वर ने उनकी बुरी योजना को एक तरफ रख दिया और उसे एक धनवान व्यक्ति की कब्र में आदर के साथ गाढ़ा गया, जिसे चट्टान में खोदा गया था (तुलना करें यशायाह 22:16)।

परिपूर्णता।

उसके सम्पूर्ण जीवन में उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा गया, कुछ लोग उसे भरमाने वाला कहते थे और कुछ लोग कहते थे कि उसमे दुष्टात्मा है और वह पागल है (यूहन्ना 7:12,20; यूहन्ना 8:48; यूहन्ना 10:19-20)। फिर भी वो गाली सुनकर गाली नहीं देता था। उसकी परीक्षा के दौरान उसे अपशब्द कहे गए और उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया। जो उसे सताते थे उन्हें वह कभी भी धमकी

नहीं देता था (1 पतरस 2:22-23)! नम्रता के साथ उसने स्वयं के साथ दुर्व्यवहार होने दिया जिसने उसे विचित्र बनाया।

[2] यशायाह 53:8 (jeshocheach)? BSI "यहाँ उस समय के लोगों में से किसके विषय में बात हो रही है?" RSV "Who in his generation considered?" LB "But who of the people in that day realised? ESV "As for his generation, who considered?"

लोगों के सामने नग्न हालत में क्रूस पर चढ़ाये जाने वाले अपमान, ठट्ठे और अस्वीकृति के सामने स्वयं को शून्य कर दिया। एक बार भी उसने स्वयं को बचाने का प्रयत्न नहीं किया। फसह के मेम्ने (निर्गमन 12:3) और यशायाह 53 के मेम्ने ने नए नियम में यीशु को एक "परमेश्वर के मेम्ने" के रूप में दर्शाने की नींव को कायम किया (यूहन्ना 1:19; 1 पतरस 1:19)।

गतसमनी में व्याकुल भरी पीड़ा और लोगों द्वारा दुर्व्यवहार और अन्यायपूर्ण महायाजकों द्वारा उसकी निन्दा के बाद, यीशु मसीह को दो डाकुओं के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, ताकि सभी को यह लगे कि यीशु भी एक अपराधी डाकू है। उसकी वास्तव में मृत्यु हुई, क्योंकि जीवित प्राणियों से उसे अलग किया गया।

यीशु को, अरिमतिया के युसूफ द्वारा एक धनवान व्यक्ति की कब्र में गाढ़ा गया (मत्ती 27:57-60)। यह एक महान सम्मान की बात थी! उसको आदर सम्मान के साथ गाढ़ा जाना यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने अपने दास, यीशु मसीह को निर्दोष माना! उसने कोई गलत काम नहीं किया, उसने कोई हिंसा की बात नहीं की और न ही उसने कोई झूठ बोला, वह पूरी तरह निर्दोष था और उसके शब्द व काम भी निर्दोष थे!

यद्यपि यीशु मसीह स्वभाव में निर्दोष और निष्कलंक था, उसने स्वेच्छा से स्वयं को शून्य करके हमारी जगह (प्रतिस्थापन पीड़ा) (तुलना करें यूहन्ना 10:17-18) पापों का बलिदान दिया!

ङ. गद्यांश 5 - यशायाह 53:10-12
यीशु मसीह एक महिमान्वित वंश प्राप्त करेगा।

भविष्यद्वाणी

गद्यांश 5 में परमेश्वर का मसीह के लिए उपहार और उसकी अंतिम महिमा का वर्णन किया गया है। आयत 10 में भविष्यद्वक्ता राष्ट्र के विश्वासियों के प्रतिनिधि (एक याजक के रूप में) के रूप में नहीं बोल रहा है, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बोल रहा है जो उद्धार की परमेश्वर की योजना (एक नबी के रूप में) की घोषणा करता है। 11वीं और 12वीं आयत में परमेश्वर स्वयं बात कर रहा है।

1. **आयत 10 उसकी पीड़ा का वर्णन परमेश्वर की योजना के रूप में एक प्रायश्चित के बलिदान और जी उठने के द्वारा करती है।**

53:10 - अनुवाद : "तौभी यहोवा को यही भाया (Hebrew: chpts, Q) कि उसे कुचले (Hebrew: dk<, Ni)(उसी ने उसको रोगी (Hebrew: chlh, Hi) कर दिया; जब तू (the Messiah) उसका प्राण (Hebrew: nefesh) दोषबलि (Hebrew: <asham) करे (Hebrew: sim, Q), तब वह अपना वंश (Hebrew: zer>a) देखने पाएगा (Hebrew: r<ah, Q), वह बहुत दिन (Hebrew: <arak, Hi) जीवित रहेगा; उसके हाथ से (Hebrew: tslch, Q) यहोवा की इच्छा पूरी (Hebrew: chefets) हो जाएगी।"

आयत 10 में मसीहा के उद्धार के कार्य का पूरा वर्णन है। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर की अनन्त योजना का हिस्सा थे।

सवाल यह है कि मसीहा को यह सब क्यों सहना पड़ा।

सवाल यह है कि जब वह निर्दोष था, तो मसीहा को यह पीड़ा क्यों सहनी पड़ी? इसका उत्तर यह है कि उद्धार की परमेश्वर की असाधारण योजना को इसी तरह पूरा होना था! मसीहा की पीड़ा परमेश्वर के उद्धार की योजना का एक अभिन्न अंग था (1 पतरस 1:19-20)। यीशु मसीह को मरना पड़ा (लूका 24:26; मत्ती 26:54), क्योंकि यही एकमात्र तरीका था जिसके द्वारा पापों का प्रायश्चित किया जा सकता था और क्योंकि इसके द्वारा पुराने नियम में की गयी भविष्यद्वाणी को पूरा होना था! "यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले।" मानव अन्याय के पीछे (यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाई में) उद्धार की परमेश्वर की योजना छिपी थी (5-6 भी देखें)! पाप के लिए दोषबलि चढ़ाना पाप के लिए प्रायश्चित के बदले दण्ड है (लैव्यव्यवस्था 4:2,4,15,24,29)। "मसीहा को पहले अपनी आत्मा (अपने व्यक्तित्व को,

स्वयं को, अपने जीवन) को एक दोषबलि के रूप में चढ़ाने की आवश्यकता थी।" दोषबलि परमेश्वर के विरुद्ध किये गए विश्वासघात के प्रायश्चित के लिए चढ़ाई जाती है (लैव्यव्यवस्था 5:15-17; लैव्यव्यवस्था 6:2-3)। पुराने नियम में प्रायश्चित के बदले बलि देना अनिवार्य था, लेकिन मसीहा की दोषबलि पूरी तरह से स्वैच्छिक थी। लोगों के लिए ऐसा सोचना असम्भव था!

- मानव इतिहास के स्तर पर, यीशु मसीह, जगत के महायाजकों की अन्यायपूर्ण निन्दा के कारण मर गया।
- परन्तु परमेश्वर के उद्धार के स्तर पर, उसे स्वयं महायाजक परमेश्वर द्वारा पूरी दुनिया के पाप की पूरी निन्दा की वजह से मारा गया!

प्रायश्चित के उसके बलिदान के तीन परिणाम थे :

- सबसे पहले वह (मसीहा), मूल/वंश, जो कि "आत्मिक वंश" हैं, उन्हें देखने पायेगा "वे बहुत से लोगों को धर्मी ठहराएगा" (आयत 11) और वह आशीष पाएँगे (देखें उत्पत्ति 12:3)।
- दूसरी बात, कि "वह बहुत दिनों तक जीवित रहेगा", अर्थात्, वह मरे हुओं में से जी उठने के बाद युगानुयुग जीवित रहेगा (प्रकाशितवाक्य 1:18 देखें)! ये उल्लेखनीय है, क्योंकि पुराने नियम में मृतकों के जी उठने के विषय में बहुत कम लिखा गया है (तुलना करें यशायाह 26:19)।
- तीसरा, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद मसीहा का एक बड़ा कार्य होगा। "उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी होगी।" "परमेश्वर का आनन्द/इच्छा उसकी पीड़ा (आयत 10अ) का सबसे गहन कारण है, लेकिन साथ ही साथ उसके अद्भुत उद्धार के कार्य का भी कारण है (आयत 10ब)!" इस दर्शन की बात का उल्लेख आयत 11 में किया गया है। उसके हाथ से, अर्थात्, उसके (प्रभु शक्ति, ज्ञान और प्रेम) द्वारा उद्धार की परमेश्वर की योजना लगातार पूरी होती चली जाएगी! यीशु मसीह अपने आत्मिक वंश/पीढ़ी जो अनन्त जीवन को पाने के योग्य हैं, उन्हें बढ़ाएगा (देखें यूहन्ना 12:32)।

2. आयत 11 में परमेश्वर के महायाजक के रूप में उसके कार्य का वर्णन किया गया है जिसमें वह अपने पुनरुत्थान के बाद कई लोगों का न्याय करेगा।

53:11 - अनुवाद : "वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर (Hebrew: >amal) उसे देखेगा Qumran adds: the light of life) और तृप्त होगा (Hebrew: sabe>a, Q); अपने ज्ञान के द्वारा (Hebrew: da>at) मेरा धर्मी दास (Hebrew: tsadiq abdo) बहुतेरों को (Hebrew: rabim) धर्मी ठहराएगा (Hebrew: tsdq, Pi); और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा (Hebrew: sbl, Q)।"

आयत 11 मसीह के उद्धार के कार्य का वर्णन करती है। आयत 11-12 में परमेश्वर स्वयं बात कर रहा है। मसीहा की पीड़ा न केवल उसके शरीर को प्रभावित करती है, बल्कि उसकी आत्मा (सम्पूर्ण अस्तित्व) (उसे कुचला जायेगा और पीड़ित बनाया जाएगा) को भी प्रभावित करती है। मसीहा अपनी पीड़ा और उद्धार का फल पायेगा और वह उसे तृप्त और ताजा करेगी।

यह वाक्यांश "मसीह के विषय में ज्ञान" नहीं देता बल्कि "उसके ज्ञान के विषय" में बताता है। परमेश्वर के अपने आत्मिक "ज्ञान" और दर्शन (उद्धार की योजना) (तुलना करें : होशे 4:6; मलाकी 2:7; यशायाह 11:2; यशायाह . 50:4, उसकी भविष्यद्वाणी का कार्यालय) के द्वारा मसीहा बहुत से लोगों का न्याय करेगा।

मसीहा प्रभु का दास ("मेरे सेवक") होगा और अपने जीवन, वचनों और कार्यों के द्वारा परमेश्वर की इच्छा को पूरी करेगा। यद्यपि जगत के अन्यायी महायाजकों ने उसे "अधर्मी" कहा होगा, परन्तु यहोवा ने उसे स्पष्ट रूप से "धर्मी" कहा। वह सम्पूर्ण धार्मिकता के साथ "अधर्मियों" का इस्राएल के देश में और पूरी धरती का न्याय करेगा, परन्तु "आत्मा में कंगालों" के लिए "जो कुछ भी अच्छा है", वह वही करेगा (यशायाह 11:4-5)!

मसीहा की धार्मिकता इस आधार पर होगी कि क्यों वह "बहुत से" लोगों को, जो "महान जन या कई लोगों को, परमेश्वर के लोगों (तुलना करें : दानिय्येल 9:27, दानिय्येल 11:33; दानिय्येल 12:3; रोमियों 5:19) का न्याय करेगा! "बहुत से" की तुलना एक के रूप में की गयी है : एक के विपरीत (मसीहा) बहुत से हैं, (एक बड़ी भीड़ जिसे कोई भी नहीं गिन सकता) (प्रकाशितवाक्य 7: 9)। "जैसा एक मनुष्य (आदम) के आज्ञा न मानने से बहुत (समस्त लोग) लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य (यीशु मसीह) के आज्ञा मानने से बहुत लोग (मसीह में सभी विश्वासीगण) धर्मी ठहरेंगे" (रोमियों 5:19)।

क्योंकि "वह उनके अधर्म का बोझ अपने ऊपर उठा लेगा"। केवल मसीह ही "बहुत से" लोगों के पापों का बोझ अपने

ऊपर उठा सकता है। बहुत लोगों के न्याय का आधार मसीहा (यहोवा के दास) का सबके बदले में दिया गया बलिदान है। मसीह के बिना उद्धार नहीं है और उसके बिना कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता (लूका 10:16 यूहन्ना 14:6 प्रेरितों 4:12)!

- आयत 11 भविष्यद्वाणी के कार्य को (परमेश्वर द्वारा प्रगट किया गया मसीह का ज्ञान)।
- और उस के याजकीय कार्य को दर्शाता है (मसीह का बलिदान जो अधर्मों को दूर करता है)।
- आयत 12 उसके राजकीय कार्य के बारे में बताती है (लूट में मसीह में छुड़ाये गए विश्वासियों की एक बड़ी भीड़ शामिल है)।

3. आयत 12 उसकी पीड़ा के बदले परमेश्वर से मिलने वाले उसके ईनाम का वर्णन करती है अर्थात् "बहुत से" लोग जिनका वह न्याय करेगा।

53:12 - अनुवाद : "इस कारण (Hebrew: laken) मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूँगा (Hebrew: chlq), और वह सामर्थियों (Hebrew: >atsum) के संग (Hebrew: chlq) लूट (booty, loot) (Hebrew: shalal) बाँट लेगा (क्योंकि (Hebrew: tachat <asher) उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया (Hebrew: >rah, Ni), वह अपराधियों (criminals) के संग गिना गया (Hebrew: mnh, Ni), तौभी उसने बहुतों के पाप : (Hebrew: chet<a) का बोझ उठ लिया (Hebrew: ns<a, Pi), और अपराधियों के लिये विनती करता है (Hebrew: pg>, Hi)।"

आयत 12 में मसीहा के वंश का वर्णन किया गया है जिसमें कई छुड़ाये हुए लोगों को शामिल किया गया है।

ऐसा नहीं कहा गया है कि वह कई (शक्तिशाली/बलशाली) लोगों के साथ लूट को विभाजित/साझा करेगा, क्योंकि उन्हें "पराक्रमी लोगों" (दुनिया में) के बराबर नहीं देखा जा सकता है। "बहुत से" में क्रिया का अर्थ है "उसका हिस्सा प्राप्त करना" (अय्यूब 27:17)। यहाँ इस वाक्यांश का यह मतलब नहीं है कि मसीहा को केवल उसके वंश के रूप में कुछ लोगों का हिस्सा मिलेगा, बल्कि इसके विपरीत कि उसे "बहुत से" उसके वंश के रूप में प्राप्त होंगे (रोमियो 5:19 देखें)! क्योंकि मसीहा "बहुत से" लोगों के अधर्मों को अपने ऊपर उठा लेगा और इस तरह "कई" (11वीं आयत) लोगों का न्याय करेगा, यहोवा उसे "बहुत से" लोगों को लूट (प्रतिदान, लूट) (उत्तराधिकार, इनाम) के रूप में देगा!

उसके प्रायश्चित के बलिदान की पीड़ा उसके महिमान्वित होने का कारण होगी! वह अपनी आत्मा को उण्डेलेगा (उत्पत्ति 9:4; लैव्यव्यवस्था 17:11), उसकी गिनती अपराधियों (डाकुओं) (लूका 22:37) के बीच होगी और वह इन "अपराधियों" के लिए जो उसे मार डालेंगे, उनके लिए प्रार्थना करेगा (लूका 23:34)।

परिपूर्णता

उसकी मृत्यु और जी उठने के माध्यम से यीशु मसीह अपने आत्मिक वंश को बढ़ायेगा (यूहन्ना 12: 24,32)।

- यद्यपि यीशु मसीह अपने ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार हमेशा के लिए जीवित है और कभी नहीं मरेगा : "मैं युगानुयुग जीवता हूँ" (प्रकाशितवाक्य 1:18),
- अपने मानव स्वभाव के अनुसार वह मर गया और उसे पुनर्जीवित किया गया। मृतकों में से पुनरुत्थान के बाद, उसका मानव स्वभाव अब भी हमेशा के लिए जीवित है।

यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर सृष्टि में और सभी चीजों में अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है (इफिसियों 1:9-10)।

- क्योंकि केवल यीशु मसीह ही "धर्मी है" जिसने परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था (सच्चाई) को पूरा किया है (तुलना करें : मत्ती 5:17; रोमियो 10:4),
- केवल वह "बहुत से" लोगों का न्याय करेगा जिन्होंने "परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह की धार्मिक व्यवस्था को प्राप्त किया है" (रोमियों 5:17-19)!

मसीहा, यीशु मसीह को अपराधियों (डाकुओं) (लूका 22:37) के बीच गिना गया और स्वेच्छा से उसने अपने प्राण को दिया (यूहन्ना 10: 11,18)। वह महायाजक बन गया है जिसमें वास्तव में परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएँ हाँ के साथ हैं (तुलना करें : 2 कुरिन्थियों 1:20)! वह "जैतून के पेड़" (परमेश्वर के लोग जो सभी राष्ट्रों के विश्वासी जन हैं) का "मूल" ("कुल बीज") है (उत्पत्ति 22:17-18; गलातियों 3:16) (रोमियों 11:17-18)। वह सामर्थी राजा बन गया है, जो अब "बहुत से" लोगों का न्याय करके उन्हें उचित ठहराएगा जो अब उसके राज्य के वारिस हैं (तुलना करें : 1:5-6; 5:9-10)। वे सभी लोग जिनका वह न्याय करेगा और उन्हें उचित ठहराएगा, वे सभी उसकी निज प्रजा हैं। वह

महान मध्यस्थ और महायाजक बन गया है जो न केवल उन लोगों के लिए प्रार्थना करता है जिन्होंने उसे मार डाला (लूका 22:34), बल्कि हमारे लिए भी प्रार्थना करता है (बच्चे, प्रजा) (यूहन्ना 17:20; इब्रानियों 7:25)।

यशायाह 53 की व्याख्या सबसे स्पष्टरूप से नए नियम में प्रेरितों के काम 8:28-35 और 1 पतरस 2:22-25 की पुस्तक में की गयी है। लेकिन यशायाह 53:10 की तुलना मत्ती 20:28 से और यशायाह 53:4,7 की तुलना यूहन्ना 1:29 से करें। मसीहा, यीशु मसीह को दु:ख उठाने के कारण अपनी महिमा में प्रवेश करना पड़ा (लूका 18:31-33; लूका 24:25-27). हालाँकि यशायाह 49:3 में "यहोवा के दास" को "सच्चे इस्राएल" के रूप में चित्रित किया गया है (जैसे कि भविष्यद्वक्ता इस्राएल राष्ट्र की पीड़ा के बारे में बात कर रहा है), यह वास्तव में इस्राएल राष्ट्र को चित्रित नहीं कर रहा है, बल्कि यहाँ परमेश्वर के दास की तुलना इस्राएल राष्ट्र से की गयी है। इस्राएल राष्ट्र अब बिना परमेश्वर का है। उसने मसीहा से घृणा की और उसे स्वीकार नहीं किया, भले ही वह पूरी तरह से निर्दोष है! यहोवा के दास का स्वभाव जो भी इस्राएल में कभी देखा गया था उससे बढ़कर है! वह परमेश्वर के उद्धार की योजना का वही मध्यस्थ है जो इस्राएल को पाप और अपराध से बचाएगा!